प्रकाशक—
द्वारिका प्रसाद सेवक
संचालक
सेवा-सदन,
चादनी चौक, दिल्ली।

मई, १९३८ ई०

मूल्य ४ आना।

मुद्रक—
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस,
नई दिल्ली।

वैद्यक मान

प्राक्कथन

पदार्थ विज्ञान, औषध विज्ञान और व्यवसाय विज्ञान में मान पद्धति का दरजा गणित में इकाई के बराबर समझा जाता है। कारण यह है कि मानज्ञान के बिना तीनों में से एक भी काम नहीं हो सकता। न तो व्यवसाय चल सकता है, न औषध प्रयोग हो सकता है और नहीं पदार्थ विज्ञान का कोई परीक्षण किया जा सकता है। इसीलिये प्रत्येक व्यवसायी एवं वैद्य को भी मान ज्ञान की उतनी ही जरूरत होती है जितनी कि व्यवसाय ज्ञान तथा औषध ज्ञान की हो सकती है।

भारतीय प्रचलित मानों का वर्णन करने से पहले उनके मौलिक विकास पर प्रकाश डालना अनुपयुक्त नहीं समझा जायगा मान ज्ञान की वह इकाई जिसपर कि मान और मात्रा निर्भर होती है, वैदिक साहित्य में मित्र कहलाती है। इसी शब्द का यूनानी में विकृत रूप मीटरोन (Metron) और फिर अंग्रेजी में पहुंचकर मीटर (Metre) बना है। मान अर्थ रखनेवाले 'मा' धातु से मित्र, मान एवं मात्रा शब्द बनते हैं, इनका अर्थ होता है क्रम से नापने वाला, नापने का काम और नपी तुली वस्तु की मिकदार। नीचे लिखे शब्दों पर विचार करने से मित्र शब्द का भाव स्पष्ट हो जाता है :—

थर्मामीटर=धर्ममित्र (गर्मी जानने का यंत्र)

बारोमीटर=भारमित्र (हवा का वजन जानने का

ज्योमीटर=ज्यामित्र या गोमित्र (भूमि रेखा

हाईड्रोमीटर=आर्द्रमित्र (पानी नापने का यत्र)

पायरोमीटर=वह्नि मित्र (अन्तरालिक-ईथरिक-मान जानने का यंत्र)

लैक्टोमीटर=दुग्धमित्र अथवा क्षीर मित्र (दूध जांचने का यंत्र)

इस तरह मित्र और मीटर मान पद्धति की इकाई के रूप में समान होने पर भी कुछ न कुछ अन्तर रखते हैं। अंग्रेजी मान पद्धति के अनुसार एक मीटर भूगोल के दोनो व्यास गोलको का चार करोडवां भाग माना जाता है। अगर हम भूमि के चारो तरफ उसकी दोनो व्यासकोलों को पार करते हुये एक रस्सी लपेट सके और फिर उस रस्सी को चार करोड भागो में बाट सके तो, उसका हरएक भाग अपनी जगह पर एक एक मीटर होगा। अग्रेजी मानों में इसी मीटर से लम्बाई चोडाई जानने के लिये एक अलग ईकाई की कल्पना की गई है जिसे लीटर (Letre) कहते हैं और यही लीटर अग्रेजी मानों की बारह खडी है।

भारत के सभी हिन्दू वैद्य इस विषय में एक मत हैं कि प्राचीन आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति जिन आचार्यों की कृपा और कुशलता से उन्नत हुई, वे लोग प्रायः सर्वस्वत्यागी, एकान्तवासी, विरक्त और जनता सेवी हुये हैं। वे लोग न तो लोकेषणा के भिक्षुक थे और न वित्तेशणा के अगुआ अथवा चन्दापन्थ के अनुयायी ही थे। इसीलिये उनके पास आम साधनो की भरमार भी नहीं होती थी। ये लोग बहुत थोडे में अपने और दूसरो के सब कामो को पूरा करने के अभ्यासी होते थे। उनका यह सक्षेप सिद्धान्त उनकी रचनाओं से लेकर जीवन के सभी विभागो में समान रूप से काम करता था। ये लोग मानो ऐसे साधनो का उपयोग ही नहीं करना चाहते थे कि जिनके लिये विजातियो एव विदेशियो का सहारा लेना पडे या ढूंढ तलाश में ही समय नष्ट करना पडे। आयुर्वेद के मानो में भी उनका यही भाव देखा जाता है। मानिका, पाणितल

मुष्टि, अञ्जलि और प्रसृति जैसे मान इस संक्षेप वाद का स्पष्ट उदाहरण समझे जा सकते हैं। इतने पर भी जो लोग अणु, परमाणु, रेणु, त्रसरेणु और वशी आदि अतीत सूक्ष्म मानों का ज्ञान रखते, तथा अपने साधक अनुचरों को सिखाते रहते थे, उनपर मान ज्ञान न रखने का दोष लगाना उन्हीं का नहीं अपनी सद्बुद्धि का भी अपमान करना है।

ऐतिहासिक दृष्टि से भी भारतीय मान पद्धति इतनी प्राचीन है कि वेद और ब्राह्मण ग्रन्थों में भी देखी जाती है। अथर्व ११।१।६ में मान एवं मात्रा की चर्चा मिलती है। शतपथ ब्राह्मण ३।९।४।८ में तुली नपी होने से ही मात्रा शब्द का निर्देश किया है। आरम्भिक युगों में अग्नि, पानी, हवा और वनस्पतियों की सहायता से एकाकी (एकांगी) चिकित्सा का ही अधिक प्रचार हुआ है। जब यह एकाकी भाव से उन्नत होकर मिश्रित योगों तक पहुँची, तभी मानपद्धति का अधिक प्रचार हुआ समझना चाहिये। बौद्धकाल में सिद्ध नागार्जुन जैसे रसायन विद्या विशारदों ने रस, रसायन तथा धातु चिकित्सा में इतनी उन्नति की कि अतिसूक्ष्म मानों की आवश्यकता हुई और उनसे अच्छा काम लिया जाने लगा। इस आचार्य्य ने पारद सस्कार, लोहवेध और कायाकल्प के प्रयोगों में असीम कीर्त्ति लाभ की, रसायन विद्या को उन्नत किया। वही समय सूक्ष्म मान पद्धति को चिकित्सा पद्धति एवं पदार्थ विज्ञान के साथ जोड़ने वाला समझा जाता है।

भारत के अतीत वैद्यक साहित्य में भिन्न भिन्न प्रदेशों के राजकीय प्रभाव के अनुसार जहाँ जिस मान पद्धति की प्रथा रही, उसकी चर्चा उन्हीं प्रदेशों के नाम से की गई है। इसका एक परिणाम यह भी हुआ कि विशाल भारत में अनेक हिन्दू और मुस्लिम राज्यों के होने से पुस्तक रचना भी अनेक रूप से हुई और उन उन पुस्तकों में उस उस प्रदेश के

प्रचलित मानो का ही अनुसरण किया गया। मुसलमानी राज के विस्तार काल में आयुर्वेद के जितने ग्रन्थ लिखे गये उनमें आम तौर पर मगध* में प्रचलित मानो को ही अगीकार किया गया है। अनेक पुस्तकों में वग (वर्तमान वगाल) और कलिग[1] देशीय मानो का उल्लेख भी पाया जाता है।

आयुर्वेदिक मानो में जितना भी मतभेद पाया जाता है, वह प्राय. "मासे" तक ही सीमित है, इससे आगे मासा से तुला और खारी तक एक ऐसा गुणक क्रम नियत किया गया है कि मासे की कोई भी उचित इकाई मानकर आगे का हिसाब सरलता से लगाया जा सकता है। मासा से आगे खारी तक लगभग सभी मान पहले से दुगुने होते चले जाते हैं, इससे मासा की कोई भी इकाई मानकर शाण, कर्प आदि मान उसी

* वर्तमान विहार और उसके निकट वर्त्ति प्रान्तो को मिलाकर गुप्त राज काल में मगध कहा जाता था। महाराजा चन्द्रगुप्त और उनके उत्तर वर्त्ति देवप्रिय अशोक आदि तत्कालीन राजाओ के प्रवल प्रताप से मगध की प्रतिष्ठा इतनी वढ गई थी कि उसीको प्रमुख मानकर अनेक प्रथाओ का जन्म हुआ। उन्ही प्रथाओ में से एक को वैद्यक में मागधी परिभाषा के नाम से वर्णन किया गया है।

[1] अग, वग और कलिग देशो में आयुर्वेद का प्रचार प्राचीन काल से ही अधिक चला आ रहा है। आज भी वगाल आयुर्वेद को उचित आदर के साथ अपनाये हुये है। जगन्नाथपुरी से लेकर कृष्णा नदी के निकट वर्त्ति प्रदेश को कलिग कहते हैं। तन्त्र ग्रन्थो में वर्णन किये गये शाक्त अथवा वाम मार्ग का जन्म और पालन पोपण प्रधान रूप से इसी प्रदेश में हुआ है। अब भी आसाम एव वगाल शक्ति पूजा, दुर्गापूजा और काली पूजा के लिये सबसे आगे देखा जाता है।

निश्चित इकाई के गुणक क्रम से सगत होते जाते हैं। 'मासा' के मान नील में मत भेद की चर्चा 'भैषज्य रत्नावली' में इस प्रकार की गई है—

षट् सर्षपैर्यवस्त्वेको गुञ्जैकातु यवैस्त्रिभि ।
माषस्तु पञ्चभिः षड्भिस्तथा सप्तभिरष्टभि ॥२॥
दशभिर्द्वादशभिश्च रक्तिभि षड्विधोमत. ।
चरकस्यहि मापस्तु दशगुञ्जाभिर्दृश्यते ॥३॥
चरकस्यतु चार्धेन सुश्रुतस्य हि मापकः ।

अर्थ :—छ सरसों के दानो बराबर एक जौ, तीन जौ के बराबर एक रत्ती। मासा ५, ६, ७, एव ८ रत्ती का होता है ॥ २ ॥ १० और १२ रत्तियो का मासा भी प्रचलित है, इनमें से चरककार ने दस रत्ती का मासा कहा है ॥ ३ ॥ चरक से आधा अर्थात् पाँच रत्ती का मासा सुश्रुत का मत है ।

महामना चक्रपाणि ने इन मतों की सगति लगाने के अभिप्राय से कहा है कि .—

द्वात्रिशन्माषकैस्तु, चरकस्य हि तैं पलम् ।
अष्ट चत्वारिंशता स्यात्, सुश्रुतस्य तु माषकः ॥
द्वादशभिर्धान्यमाषैश्चतुः षष्ट्या तु तैः पलम् ॥६३॥
एतच्च तुलितं पञ्च रक्तिमाषात्मकम्पलम् ।
चरकादर्धपलोन्मानं चरके दश रक्तकै ।
माषै. पलं चतुःषष्ठ्या यद् भवेत् तत्तथेरितम् ॥६४॥

अर्थ —बत्तीस (३२) उड़द के दानों बराबर एक मासा चरक का मत है, इससे पल बनाने में अड़तालीस मासे पडते हैं, सुश्रुतमत मे एक

मासा बारह (१२) धान्य उडदो के दानो बराबर है और इसमें (६४) चौंसठ जोडने से एक पल बनता है ॥ ६३ ॥

आम तौर पर यह तोल पाच रत्ती वाले मासे की समझी जाती है, क्योंकि चरक से आधा तोल ही सुश्रुत की पूरी तोल होती है और चरक दस रत्ती का मासा मानता है। इस सुश्रुत वाले मासे से पल बनाने में चौंसठ (६४) मासे पडते है, वही ऊपर कहा गया है ॥ ६४ ॥

अब यदि हम सुश्रुत में कहे हुये धान्यमाषक को वास्तव में वही धान्य उडद समझें जो आजकल काला अथवा छोटा उडद या "मूगमाष" कहलाता है, तब सारा मतभेद मिट जाता है, क्योंकि मोटा उडद दो धान्य उड़द के दानो बराबर होता है। इससे सुश्रुत कथित उडद के २४ दानों बराबर होने पर ६४ मासो का एक पल बनानें में सब मिलाकर २४×६४=१५३६ दाने होगे, और इधर चरक मत के ३२ दानो से ४८ मासो का एक पल बनाने में भी सब मिलाकर ३२×४८=१५३६ ही दानें पडेंगे। ऐसी व्यवस्था करने पर दोनों मतों में किसी सीमा तक समानता हो जाती है।

आयुर्वेद के अनेक तन्त्रों का अनुशीलन करने से पता लगता है कि तोल अथवा मान की निश्चित सफलता के लिये एक मासा कम से कम ५ रत्ती और अधिक से अधिक १२ रत्ती का होता है। इस ५ से १२ रत्ती तक की मान रेखा को यदि हम किसी एक माध्यम पर न रखें तो आयुर्वेद के अन्यान्य मानो में दुगुनें से भी ऊपर का अन्तर पड जाता है। यह ठीक है कि एक पडित एव विद्वान वैद्य किसी भी पुस्तक से किसी भी योग का सकलन करते समय उसी पुस्तक में लिखे मानो से गुणक क्रम द्वारा काम निकाल सकता है, किन्तु यह बात सभी वैद्यो के लिये सुविधा जनक नहीं कही जा सकती।

आज कल अंग्रेजी भारत में अंग्रेजी सरकार द्वारा अस्सी (८०) तोले का सेर निश्चित होने पर भी कहीं ६४ तोले, कहीं ९६ तोले, कहीं १०० तोले और कहीं कहीं इससे भी ऊपर का सेर देखा जाता है। बम्बई जैसे व्यापारिक नगर में इसकी और भी मट्टी खराब है, वहां पर दूध, अनाज, एवं सब्जियें तोलने के लिये भी अलग अलग सेर देखे जाते हैं। सेर को लेकर ही ऐसी धांधली पाई जाती हो, सो बात नहीं; मन और तोले के इस्तेमाल में भी यही गड़बड़ मौजूद है। भारत के सभी दुकानदार पसारी, अत्तार और किरानेवाले अब तक पुरानी चाल के अनुसार ९६ रत्ती और १२ मासे का तोला मानकर ही काम करते थे। इधर जब से ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने सिक्कों का तोल निश्चित किया है तब से सिक्के ही तोलने के बाट बनाये जा रहे हैं। रुपये ने तो खास तौर पर तोले की जगह छीन ली है। सभी जानते हैं कि रुपया १८० ग्रेन (रत्तियों के हिसाब से ९० रत्ती) का होता है और पुराने तोले का वजन ९६ रत्ती होता है। किन्तु देखा जारहा है कि आम दुकानदार, कम से कम क़ीमती चीजें बेचते समय, तोले की जगह रुपये को ही दे रहे हैं। विदेशी माल बेचने वाली कम्पनियां भी इसी हिसाब से काम कर रही हैं।

इसमें सन्देह नहीं कि १८० ग्रेन का तोला मान लेने से अंग्रेजी और देसी मानों का अन्तर मिटकर उनमें समानता आ सकती है, क्योंकि ऐसा करने से १५ ग्रेन का एक मासा, १ ड्राम का शाण और टंक, ३ ड्राम का तोला, २॥ तोले का १ औंस और पौंड या आध सेर का अन्तर भी मिट जाता है। किन्तु ऐसा सब हालतों में हो नहीं रहा। तोले के लिये तो रुपया काम दे रहा है पर इससे आगे औंस और पौंड के बाट देसी बाटों से अलग काम में लाये जाते हैं। ऐसी ही अड़चनों और आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर यह कोशिश की गई है, कि

आयुर्वेद के लगभग सभी मानो का वर्तमान (Standard) पर सग्रह किया जाय। आयुर्वेद के अलावा यूनानी, अग्रेजी, ईरानी, हिन्दी मानों और विभिन्न प्रान्तो में प्रचलित मानों को भी, जितने मिल सके, इस सग्रह में शामिल कर दिया गया है। सभी मानो को एकत्र करके अकारादि क्रम मे लिखा गया है कि किसी भी मान को तलाश करके प्रचलित मानो के साथ मिलान करने में आसानी रहे। आशा है कि इस प्रयत्न से किसी भी तोल माप (Weights and Measures) के मान जानने के लिये किसी भी वैद्य, हकीम और दुकानदार को असुविधा नहीं रहेगी, यह ही मेरे प्रयास की सफलता कही जासकती है।

इस सग्रह में ५ से १२ रत्ती तक माने गये मासा को ठीक बीच में ८ रत्ती का एक मासा मानकर गणना की गई है।

विशेष जानकारी और काम की सुविधा की दृष्टि से अन्त में कुछ उपयोगी और आवश्यक पट्टिकायें—तालिकायें (Tables) भी दे दी गई हैं।

कुछ प्रान्तीय मानों और दूसरे प्रचलित मानो का ज्ञान न होने से छूट जाना और अशुद्ध लिखा जाना भी संभव है। ऐसी भूलो और उपयोगिता की दृष्टि से दूसरी विशेषताओ को सुझाने वाले सज्जनो का धन्यवाद किया जायगा और दूसरे सस्करण में आवश्यक सशोधन तथा वृद्धि कर दीजायगी।

दिल्ली,
२ अप्रैल १९३८ ई०

आयुर्वेद का एक भक्त—
कविराज श्री शान्तस्वामी।

संकेत

इस संग्रह में नीचे लिखे संकेत दिये गये हैं—

अर०	अरबी।	फा०	फारसी।
अंग०	अंग्रेजी।	यूना०	यूनानी।
ईरा०	ईरानी।	रू०	रूसी।
गुज०	गुजराती।	वै०	वैद्यक।
तुर०	तुर्की।	सं०	संस्कृत।
पंजा०	पंजाबी।	हि०	हिन्दी।
बि०	बिहारी।		

दृष्टव्य

इस संग्रह में आजकल के नीचे लिखे प्रचलित मानों (वजनों-Weights) का प्रयोग किया गया है —

२ चावल के बराबर	१ यव या धान (ग्रेन)
२ धान या ग्रेन के बराबर	१ रत्ती ।
२ रत्ती (४ धान) के बराबर	१ चना ।
२ चना (४ रत्ती) के बराबर	१ मटर ।
२ मटर के बराबर	१ मासा ।
२ मासे के बराबर	१ पाई ।
२ पाई के बराबर	१ शाण या टंक ।
२ शान (८ मासा) के बराबर	१ कोल ।
३ शान (१२ मासा) के बराबर	१ तोला ।
२½ तोला (३० मासे) के बराबर	१ औंस ।
२ औंस (५ तोले) के बराबर	१ छटांक ।
२ छटांक के बराबर	१ अद्धा ।
२ अद्धा (२० तोला) के बराबर	१ पाव ।
२ पाव (४० तोला) के बराबर	१ रतल, आध सेर ।
२ रतल के बराबर	१ सेर ।
२½ सेर (२०० तोला) के बराबर	१ ढैय्या ।
५ सेर (४०० तोला) के बरबर	१ घडी ।
२ घडी के बराबर	१ घडा ।

२ घडा (२० सेर) के बराबर	१ धौन।
२ धौन के बराबर	१ मन।

१—रतल और पौंड समान अर्थ रखते हुये भी रतल का प्रयोग आम तौर पर पानी जैसी पतली चीज़ो के लिये किया जाता है।

२—"तोल" शब्द का प्रयोग सूखी चीज़ो का वज़न जानने के लिये किया गया है।

"नाप" शब्द का प्रयोग लम्बाई चौडाई जानने के लिये और "भर" व "माप" शब्दो में से किसी एक का प्रयोग पानी जैसी पतली चीज़ो का भार जताने के लिये किया गया है।

अ

अक्ष—(वै०) १६ मासे ।

अठन्नी—(हि०) ३ धान कम ६ मासे ।

अणु—(वै०) १० परमाणुओं के बराबर ।

अतरानोस—(यू०) ५२ मासे ।

अतालीतून—(यू०) ८ सेर ११ छटांक २ तोले ।

अद्धा—(हि०) १० तोले=आधपाव

अद्धी—(हि०) ९ रत्ती ।

अवरीक—(अर०) २ सेर ६ छटाक ।

अवोनस—(अर०) ६ रत्ती ।

अबोलो—(अर०) ३ रत्ती ।

अयात असल—(अर०) १८ छटाक ४ तोले ।

अयातघुन—(अर०) २० छटाक २ तोले ।

अर्धपल—(वै०) ३२ मासे ।

अर्धमरीचि—(वै०) ९ अणु या ९० परमाणु ।

अर्धशरावक—(वै०) २१ तोले ४ मासे ।

अशरफी—(फा०) ९ मासे ६ रत्ती ।

अष्टमान—(वै०) २१ तोले ४ मासे ।

अष्टमिका—(वै०) ३२ मासे ।

अंजली } (वै०) २१ तोले ४ मासे ।
अजुली }

आ

आढक—(वै०) ४ सेर २१ तोले ४ मासे ।

आम्र—(वै०) ५ तोले ४ मासे ।

आसार—(यू०) १ सेर=८० तोले ।

इ

इकन्नी—(हि०) ६० धान या ४ मासे ।

इंच—(अग०) १/१२ फुट नाप में ।

इस्कूपल—(अग०) १० रत्ती ।

इस्तार—(अर०) २१ मासे ।

उ

उक्रिया—(अर०) १ औंस से कुछ ऊपर (३५ मासे)

उदुम्बर—(वै०) १६ मासे ।

उन्मान—(वै०) १७ सेर ५ तोले ४ मासे ।

उरुज्जम—(अर०) १ धान भर ।

ऊ

ऊन—(अर०) २ तोले ९ मासे।

औ

औंस—(अग०) ३० मासे तोल या ४८० बूँद भर।

क

कतीरा—(अर०) १२ अणु के बराबर।

कन्तार—(अर०) १ मन १२ सेर।

कफ—(फा०) १ मुट्ठी भर = १ अजली भर।

कफदस्त—(फा०) १ मुट्ठी भर = १ अजली भर।

करमध्य—(वैं०) १६ मासा के लग भग।

कर्ष—(वैं०) १६ मासा के लगभग।

कलश—(वैं०) १७ सेर ५ तोले ४ मासे भर।

कवलग्रह—(वैं०) १६ मासा के बराबर।

कसोगनी—(यू०) २ मासे भर।

कवानीस—(यू०) ४ तोले ६ मासे।

कॅवां—(वि०) ५ तोला के बराबर।

कंसमाय—(वैं०) ४ सेर २१ तोले ४ मासे।

किञ्चित्पाणि—(वैं०) १६ मासे भर।

किस्त—(रू०) ६८ तोला के लग भग।

कीरात—(अर०) ४ वान या २ रत्ती।

कील—(अर०) १ मन २५ सेर के लगभग।

कीलना—(अर०) २ सेर के बराबर।

कीला—(अर०) ३ मासे कम १ सेर।

कुज्मा—(अर०) १ मासा के बराबर।

कुडव—(वैं०) २१ तोले ४ मासे।

कुम्भ—(वैं०) ३४ सेर १० तोले ८ मासे।

कुरत्ना—(अर०) १मासा के लगभग

कोतील—(अर०) २७ तोला के लगभग।

कोतूली—(अर०) ४२ मासा के लगभग।

कोब—(अर०) २४ छटाक।

कोर—(अर०) ५ सेर ८ तोले।

कोल—(वै०) ८ मासे।

कोलू (लो) न—(अर०) ३६ तोले।

क्वार्ट—(अग०) २½ रतल के वरावर भार से।

क्षुद्रक—(वै०) ८ मासे।

ख

खरदल—(फा०) राई के एक दाना वरावर।

खरदला—(अर०) राई के एक दाना वरावर।

खरनोबा शामिया—(अर०) एक रत्ती के वरावर।

खारी—(वै०) ३ मन १६ सेर ४२ तोला ८ मासा।

खोड़शी—(वै०) ५ तोला ४ मासा।

खोडशिका—(वै०) ५ तोला ४ मासा।

ग

गज—(हि०) २ हाथ या ३ फीट।

गजपुट—(वै०) एक गज़ लम्बे, चौडे और गहरे गढे मे उपले भरकर दी जाने वाली आग।

गाज़बेगी—(ईरा०) ८ मासा के वरावर।

गिरह—(हि०) २¼ इच या १ गज़ का १६ वा भाग।

गुञ्जा—(वै०) १ रत्ती।

गैलन, गेलन—(अग) ५ सेर भार मे और ५ सेर २६ तोले तोल मे।

गोणी—(वै०) १ मन २८ सेर २१ तोले ४ मासे।

ग्राम—(अग०) १५ ग्रेन या १ मासा।

ग्रेन—(अग०) १ धान या २ चावल।

घ

घट—(वै०) १७ सेर ५ तोले ४ मासा।

घुघची—(हि०) १ रत्ती।

च

चतु षष्टीपल—(वै०) ४ सेर २१ तोले ४ मासे।

चतु षष्टी शरावक (वै०) ३४ सेर १० तोले ८ मासे।

चतुर्थिका—(वै०) ५ तोले ४ मासे।

चना—(हि०) ५ रत्ती के वरावर।

चवन्नी (चादी की)—(हि०) १ रत्ती कम ३ मासे।

चवन्नी (निकल की)—(हि०) २ रत्ती कम ८ मासे।

चावल—(हि०) ½ रत्ती या आधा धान।

चहा—चाहा—(पजा०) १ पन्ना भर या १० तोला के लगभग।

छ

छटंकी-(हि०)छ टंक या २½ तोला।

छटाक—(हि०) ५ तोले।

छदाम—(हि०) ८ मासे।

ज

जर्रा—(फ़ा०) १ रेणु के बराबर।

जोउह—(अर०) १८ मासा के बराबर।

जोउह बलतिया—(अर०) ४ मासे ४ रत्ती के बराबर।

जोउह मिलकिया—(अर०) २१ मासा के बराबर।

जोस्का—(अर०) ३ रतल या ६० तोला के बराबर।

जौ—(हि०) १ ग्रेन के बराबर।

ट

टका—(हि०) १ तोला से कुछ ऊपर।

टंक—(वै०)४ मासे या १ शाण।

टम्बलर—(अग०) १० तोला भर के लगभग।

टाक—(हि०)१ टक या ८ मासे।

टीकप, टी-कप—(अग०) १ चाह की प्याली भर या ५औंस भर।

टी-स्पून—(अग०)चाह का चमचा भर या चार मासे भर।

टेबल-स्पून—(अग०) ८ मासे से १ तोला भर तक।

टोपी—(हि०) १ रतल के लगभग।

टोपा—(हि०) २ छटाक कम २ सेर।

ड

डिजर्ट स्पून—(अग०)८मासे भर।

ड्रम—(अग०) २ मन भर के लगभग।

ड्राम—(अग०) ६० ग्रेन तोल मे। ६० बूंद माप मे।

त

तस्सोज—(अर०) २ धान या १ रत्ती।

तिन्दुक—(वै०) १६ मासा के बराबर।

तिमिर्सा—(अर०) ८ धान या ४ रत्ती।

तुला—(वैं०) ६ सेर ५३ तोले ४ मासे।

तोला—(हि०) १२ मासे।

द

दमडी—(हि०) २मासा के वरावर।

दण्ड—(स०) ६० पल या २४ मिनट का समय।

दरह्मी—(अर०) ४ मासा के वरावर।

दरहम—(फा०) ४ मासा के वरावर।

दाग—(फा०) ८ धान या ४ रत्ती।

दानक—(अर०) ८धान या ४रत्ती।

दाम (कच्चा)—(हि०) १४ मासा के वरावर।

दाम (पक्का)—(हि०) २१ मासा के वरावर।

दिरम—(फा०) ४मासा के वरावर।

दिरहम—(फा०) ४ मासा के वरावर।

दीनार—(म०) ४ मासा के वरावर।

दुअन्नी (चाँदी की)—(हि०) २२½ धान या ११¼ रत्ती।

दुअन्नी (निकलकी)—(हि०) ९० धान के वरावर।

दुसेरी—(हि०) २ सेर अंग्रेजी तोल मे।

दोगजी—(हि०) २ गज़ नाप मे।

दोरक—(अर०) ३ सेर ३२ तोला के लगभग।

द्रोण—(वैं०) १७ सेर ५ तोला ४ मासे।

द्रोणी—(वैं०) १ मन २८ सेर २१ तोले ४ मासे

द्रक्षण—(वैं०) ८ मासे।

ध

धडा—(हि०) २½ सेर अंग्रेज़ी तोल।

धडी—(हि०) ५ सेर अंग्रेज़ी तोल।

धरण—(वैं०) ४ मासा के वरावर।

धान—(हि०) १ यव या १ ग्रेन।

धान्यक—(वैं०) १मासा के वरावर।

धेला—(हि०) ३ मासा १ रत्ती।

धेली—(हि०) ३ धान कम ६मासे।

धौन—(हि०) २०सेर अंग्रेज़ी तोल।

न

नकीर—(अर०) १मासा के वरावर।

नल्वण—(वैं०) १७ सेर ५ तोला ८ मासा।

नवात—(अर०) १३ मासे ४ रत्ती।

नस्तून कबीर—(अर०) ८ तोला ३ मासा।

नस्तून सग़ीर—(अर०) ७ तोला ३ मासा।

निष्क—(वै०) ४ मासा के बराबर।

प

परमाणु—(वै०) १ अणु का १० वां भाग तोल से।

पल—(वै०) ६४ मासा के बराबर।

पन्ना—(हि०) १० तोला भर।

पसेरी—(हि०) ५ सेर अंग्रेजी तोल से।

पाई—(हि०) २ मासा के लगभग।

पाइन्ट—(अंग) २० औंस या १¼ रतल भर।

पडो (रो) पी—(पजा०) ३७½ तोला तोल से = १ रतल भार या माप से।

पाणितल—(वै०) १६ मासा के बराबर।

पाणि—(वै०) १६मासा के बराबर।

पाणितिन्दुक—(वै०) १६ मासा के बराबर।

पाणिमानिका—(वै०) १६ मासा के बराबर।

पाव—(हि०) १० तोला तोल से, ¼ रतल माप से।

पिचु—(वै०) १६ मासा के बराबर।

पैसा (अंग्रेजी)—(हि०) ५० रत्ती या ६¼ मासे।

पैसा(नानकशाही)-(हि०)८ मासा।

पैसा (मन्सूरी)—(हि०) ८ मासा।

पौआ—(हि०) २० तोले तोल से, ½ रतल माप से।

पौआ (कच्चा)—(हि०) १६ तोला भर।

पौण्ड—(अंग०) १६ औंस तोल से, १६ औंस माप से।

प्रकुञ्ज—(वै०) ५ तोले ४ मासे।

प्रसृति—(वै०) १० तोला ८ मासा तोल से।

प्रस्थ—(वै०) ८५ तोला ४ मासा।

फ

फर्क़—(अर०) ७ सेर के लगभग तोल से।

फलञ्जर—(अर०) ६ मासा के लगभग तोल से।

फल्स—(अर०) १८ मासा के लगभग तोल में।

फुट—(अग०) १२ इंच नाप में।

फोमायूम—(यूना०) ३ मासा के लगभग।

फ्लूड औंस—(अग०) १ औंस माप मे या ४८० वूद।

फ्लूड ड्राम—(अग०) ६० वूद माप मे।

फ्लूड पौंड—(अग०) १रतल माप से।

फ्लूड पाइन्ट—(अग०) १$\frac{1}{6}$ रतल या २० औंस भर।

ब

बकताल मिसरिया—(अर०) ३ मासा के वरावर।

बकताल यूनानिया—(अर०) १२ रत्ती के वरावर।

वकताल सिकन्दरी—(अर०) १८ रत्ती के वरावर

वरञ्ज—(फा०) १ रत्ती।

वहिलोली—(फा०) ८ मासा के वरावर।

विन्दक़—का—(फा०) १ रीठा या ४ मासा के वरावर।

वल्ल—(वै०) ३ रत्ती के वरावर।

विल्व—(वै०) ५ तोला ४ मासा के वरावर।

भ

भाजन—(वै०) ४ सेर ७१ तोले ८ मासे।

भार—(वै०) ३ मन ३२ सेर ६ तोले ८ मासे।

म

मकोक—(अर०) ३ सेर ६७ तोले तोल से, ७ रतल २७ तोले भार से।

मटर—(हि०) ८ धान के वरावर।

मटरारी (गोली)—(हि०) चार चार रत्ती की गोली।

मद—(अर०) १ रतल भर।

मन अंग्रेजी—(हि०) ८० तोला वाले सेर मे ४० सेर।

मन अरबी—(हि०) ४१ तोला के लगभग।

मन आलमगीरी } —(फा०) ४०सेर
मन औरंगजेबी } अंग्रेजी तोल से।

मन इन्तालीकी—(अर०) ४६ तोला के लगभग।

मन तबरेजी—(फा०) ७ सेर ६५ तोले अंग्रेजी तोल से।

मन तिबरी—(फा०) ६८ तोला के लगभग।

मन चर्खी—(फा०) [illegible] सेर के लगभग।

मन मिल्की—(फा०) ६० तोला के लगभग।

मन मिसरी }
मन मिसरानी } —(फा०) ८६ तोला के लगभग।

मन रूमी—(फा०) ५८ तोला के लगभग।

मन शाही—(फा०) ५ सेर ८१ तोला के लगभग।

मन सिकन्दरी—(फा०) ८८ तोला के लगभग।

मन—(अर०) ४ तोला ८ माशा।

मस्तारलकबीर—(अर०) ८ तोला [illegible] माशा के बराबर।

मस्तारनसगीर—(अर०) २ तोला के बराबर।

माणि(नि)का—(वै०) ८२ तोला ८ माशा के बराबर।

माणी—(हि०) ५ मन अंग्रेजी तोल से।

मानी—(पंजा०) १० मन अंग्रेजी तोल से।

मातल—(अर०) ३ तोला ६ माशा।

माषक }
माष } —(वै०) ८ रत्ती तोल से।

माशा-सा—(हि०) ८ रत्ती तोल से।

मिनमम्—(अंग०) बूंद—१ बूंद माप से।

मिलअका—(अर०) ८ मासे तोल से।

मिसकाल—(अर०) ४ मासे ४ रत्ती के बराबर।

मिसक़ाल सीरफी—(अर०) ४ मासे ४ रत्ती के बराबर।

मुष्टि—(वै०) १ मुट्ठीभर या ५ तोले ४ मासे।

मोहर—(हि०) १० मासा के बराबर।

य

यकछारीका—(फा०) १० तोला ७ मासा के बराबर।

र

रतल—(गुज०) १ पौंड तोल से, १६ औंस माप से।

रत्ती—(हि०) २ धान के बराबर।

राशि—(वै०) १७ सेर ५ तोला ४ मासा।

रुपैया—(हि०) १८० ग्रेन तोल से।

रेणु—(वै०) ३ अणु के बराबर।

व

वशी—(वै०) ३ अणु के बराबर।

वटक—(वै०) १ मासा के बराबर।

वट्टी—(पजा०) २ सेर अंग्रेज़ी तोल से।

वल्ल—(वै०) ३ रत्ती के बराबर।

वायनग्लास—(अग०) ५ तोले भर।

वाह—वाहा—(वै०) १ मन २८ सेर २१ तोला ४ मासे।

विडाल—(वै०) १६ मासा के बराबर।

विडाल पदक—(वै०) १६ मासा के बराबर।

श

शईरा—(अर०) २ धान के बराबर।

शराव—(वै०) ४२ तोला ४ मासा के बराबर।

शाण-न—(वै०) ४ मासा के बराबर।

शातादशक—(वै०) ६४ मासा के बराबर।

शारक—(फा०) ५ तोला के बराबर।

शुक्ति—(वै०) ३२ मासा के बराबर।

शूर्प—(वै०) ३४ सेर १० तोला और ८ मासा के बराबर।

शोडशिका—(वै०) १६ मासा के बराबर

शोडशी—(वै०) १६ मासा के बराबर।

ष

षोडशि का—(वै०) १६ मासा के बराबर।

षोडशी—(वै०) १६ मासा के बराबर।

स

सकर्जा कबीरा—(अर०) २४ तोला के बराबर।

सकर्जा सग़ीरा—(अर०) ८ तोला ३ मासा के बराबर।

सदफा कबीरा—(अर०) २४ मासा के बराबर।

सदफा सग़ीरा—(अर०) १४ मासा के बराबर।

साअ—(अर०) ४ सेर के लगभग।

सासोना—(आ०) ६ रत्ती के बराबर।

सार—(अर०) १ सेर।

सावरन } –(हि०) ७ मासा के
सावरेन } बराबर।

सुर्ख—(फा०) १ रत्ती के बराबर।

सुवर्ण—(वै०) १६ मासा के बराबर

सरसो—चौथाई धान या ½ रत्ती।

सेर अकबरी—(फा०) १४० तोला के लगभग।

सेर अंग्रेजी—(हि०) ८० तोला।

सेर आलमगोरी–(फा०) ७७ तोला के लगभग।

सेर कच्चा—(हि०) ३२ तोला के बराबर।

सेर पक्का—(हि०) १ सेर पूरा अंग्रेजी तोल में।

सेर फरुख शाही—(फा०) ८४ तोला के लगभग।

सेर हिन्दी–(हि०) कहीं ८० तोले, कहीं ९६ तोले, कहीं १०० तोले और किसी किसी जिले में १०५ तथा १२० तोले का देखा जाता है। बम्बई में ३२ तोले, ४० तोले, ४८ तोले, ६४ तोले और ८४ तोले का प्रचलित है।

सेन्टीमीटर—(अग०) १ सेन्टीमीटर अथवा शतमित्र व्यास में १५ बूंद पानी की समाई होती है।

सीनोफस—(यूना०) २ सेर २ तोले के लगभग।

स्क्रूपल } —(अग०) १० रत्ती के
स्क्रोपल } बराबर तोल से।

ह

हसपद–(वै०) १६ मासा के बराबर।

हसपदक–(वै०)१६ मासा के बराबर।

हब्बा—(फा०) १ रत्ती।

हमिस्सा—(अर०) १ मासा के बराबर।

हाथ—(हि०) ½ गज नाप से।

हेम—(वै०) १ मासा।

होतल—(अर०) ८ तोला ३ मासे के बराबर।

पट्टिकायें=Tables

संख्या

१ इकाई—एका।

२ दहाई—दशा।

३ सैकडा—शत।

४ हजार—सहस्र।

५ दस हजार—अोयुत।

६ लाख—लक्ष।

७ दस लाख—नियुत।

८ करोड—कोटि।

९ दस करोड़—

१० अरब—अर्बुद।

११. दस अरब—

१२ खरब—

१३ दस खरब—निखरब।

१४ नील—

१५ दस नील—

१६ पदम—

१७ दस पदम—महा पदम।

१८ शख—

१९ दस शख—

१०००,

एक सहस्र—हजार।

१,०००,०००

दस लाख=एक मिलयन।

१,०००,०००,०००,०००

दस खरब=एक बिलयन

व्यापार में काम आने वाले संकेत

(१)

)। एक पैसा=पाव आना।

)॥ दो पैसा=अधन्ना या आध आना।

)॥। तीन पैसा=पौन आना।

-) चार पैसा=एक आना।

-)। पाच पैसा=सवा आना।

-)॥ छ पैसा=डेढ आना।

-)॥। सात पैसा=पौने दो अना।

=) दो आना।

≡) तीन आना।

।) चार आना।

॥) आठ आना।

॥।) बारह आना।

१) सोलह आना=एक रुपया।

(२)

)१ एक रत्ती।

) १) आठ रत्ती=एक माशा।

)१) बारह माशा=एक तोला।

(३)

ʃ- एक छटाक।

ʃ= दो छटाक=आधा पाव।

ʃ≡ तीन छटाक=पौन पाव

ʃ। चार छटाक=एक पाव।

ʃ॥ दो पाव=आधा सेर।

ʃ।॥ तीन पाव=पौन सेर।

ʃ१ चार पाव=एक सेर।

।ʃ दस सेर।

।ʃ१ ग्यारह सेर।

॥ʃ बीस सेर।

।॥ʃ तीस सेर।

१ʃ चालीस सेर=एक मन।

आनों के रुपये

१००	आनो	के	६।)	सवा छ रुपये।
२००	आनों	के	१२॥)	साढ़े बारह रुपये।
३००	आनो	के	१८।॥)	पौने उन्नीस रुपये।
४००	आनो	के	२५)	पच्चीस रुपये।
५००	आनो	के	३१।)	सवा इकत्तीस रुपये।
६००	आनो	के	३७॥)	साढे सेंतीस रुपये।
७००	आनों	के	४३।॥)	पौने चवालीस रुपये।
८००	आनो	के	५०)	पचास रुपये।
९००	आनों	के	५६।)	सवा छप्पन रुपये।
१०००	आनों	के	६२॥)	साढे बासठ रुपये।
११००	आनो	के	६८।॥)	पौने उनहत्तर रुपये।
१२००	आनो	के	७५)	पचहत्तर (पौनसौ) रुपये।
१३००	आनो	के	८१।)	सवा इक्यासी रुपये।
१४००	आनो	के	८७॥)	साढे सत्तासी रुपये।
१५००	आनों	के	९३।॥)	पौने चौरानवे रुपये।
१६००	आनों	के	१००)	एक सौ रुपये।

भारतीय मुद्रा

३ पाई=एक पैसा।

४ पैसे या १२ पाई=एक आना।

२ आना=एक दुअन्नी।

२ दुअन्नी या ८ पैसा=एक चवन्नी।

२ चवन्नी या १६ पैसा=एक अठन्नी।

२ अठन्नी या ६४ पैसा अथवा १६ आना } =एक रु०

१५ रुपये=एक पौंड या सावरेन।

मुहर एक सोने का सिक्का है जो तोल में रुपये के समान होता है। चाँदी के सिक्को में उसका मूल्य घटता बढता रहता है।

१५ कलदार रुपये=सोलह प्रचलित रुपये।

१०० राई (बम्बई का)=एक चौअन्नी=चार आना।

१०० सेण्ट (लका का)=एक रु०।

१ पैगोडा (मदरास का)=तीन रुपया आठ आना।

ताँबे के सिक्के :—पाई, धेला-अधेला, पैसा, अधन्ना—टका।

निकल के सिक्के :—इकन्नी, दुअन्नी, चौअन्नी।

चाँदी के सिक्के :—दुअन्नी, चवन्नी, अठन्नी-अधेली, रुपया।

भारत में सोने का सिक्का केवल पौंड-गिनी चलता है।

बगला भाषा के बही-खातो में निम्नलिखित प्रणाली प्रचलित है –

४ कौडी=एक गण्डा।

५ गण्डे=एक बूडी या पैसा।

४ बूडी या २० गण्डा=एक पन या आना।

४ पन=एक चौक या चौअन्नी।

४ चौक=एक कहान या रुपया।

१ कोडी=३ क्रान्ति=४ काक=५ ताल=७ द्वीप=९ दन्ती=२७ यव =८० तिल।

नीचे लिखी सूची में पैसे के वह भाग लिखे है जो विहार, और पजाब में प्रचलित है :—

२ अद्धी=एक दमडी।

२ दमडी=एक छदाम।

२ छदाम=एक अधेला।

२ अधेला=एक पैसा।

अंग्रेज़ी मुद्रा

४ फार्दिग=एक पेनी या पेन्स=एक आना।

१२ पेनी=एक शिलिंग=बारह आना
२० शिलिंग=एक पौंड या सावरन=
पन्दरह रुपया।
२ शिलिंग=एक फ्लोरिन।
५ शिलिंग=एक क्रोन।
२१ शिलिंग=एक गिनी।
२७ शिलिंग=एक मंडोर।

भारतीय मुद्रा के साथ इनके विनमय—बदले की दर बाजार भाव से प्राय घटती बढती रहती है।

१ फार्दिंग=एक पैसा।
१ पेंस=एक आना।
१ शिलिंग ४ पेंस=एक रुपया।

ट्राय मान

फ्रांस के ट्राय नगर में सर्व प्रथम प्रचलित होने के कारण इस तोल का नाम 'ट्राय' है। अंग्रेजी जौहरी इसको सोना, चांदी और हीरा आदि रत्न तोलने के काम में लाते हैं—

२४ ग्रेन=एक पेनीवेट।
२० पेनीवेट=एक औंस।
१२ औंस=एक पौंड।
अतएव १ पौंड ट्राय=५७६० ग्रेन।

हीरे और अन्य रत्नों की तोल कैरट से होती है और एक कैरट लगभग ३१/६ ग्रेन के बराबर होता है।

एवर्डोपाइज मान

एवर्ड=सामान, डो=के, पाइज=तोल।

असबाब=सामान-बोझ—और अन्य अल्प मूल्य की भारी वस्तुओं को तोलने के काम में आने के कारण इस तोल का यह नाम पडा है।

१६ ड्राम=एक औंस।
१६ औंस=एक पौंड।
२८ पौंड=एक क्वार्टर।
४ क्वार्टर=एक हण्ड्रेडवेट (हडर)।
२० हडर=एक टन।
१ स्टोन=१४ पौंड।
१ पौंड एवर्डोपाइज=७००० ग्रेन ट्राय।

भारतीय बाजारी तोल

८ खसखस	=एक चावल।
८ चावल	=एक रत्ती।
८ रत्ती	=एक माशा।
१२ माशा	=एक तोला।

५ तोला =एक छटाक।

४ छटाक या २० तोले=एक पाव।

८ छटाक या ४० तोले=आध सेर।

१६ छटाक या ८० तोले=एक सेर।

५ सेर =एक पसेरी।

८ पसेरी या ४० सेर=एक मन।

खसखस, चावल, रत्ती, माशा तोला—औषधि, जेवर, सोना व चादी तोलने में काम आते हैं और शेष से तोल में भारी और अल्प मूल्य की चीजें तोली जाती हैं।

१ तोला वजन=एक रुपया=१८० ग्रेन ट्राय।

१ मन=सौ पौंड ट्राय=८२$\frac{2}{3}$ पौंड एवर्डोपाइज।

३५ सेर=७२ पौंड एवर्डोपाइज।

एक पौंड एवर्डोपाइज+अधन्ने का वजन (२०० ग्रेन)=$\frac{1}{2}$सेर।

कारखानो के ३ मन= २ हडर।

४९ मन बाजारी=३६ हडर=५४ मन कारखानों के।

१ हडर=एक मन १४ सेर ७$\frac{1}{2}$ छटाक।

मद्रास प्रान्तीय तोल

३ तोला=एक पलम्।

८ पलम्=एक सेर।

५ सेर या ४० पलम्=एक विस।

८ विस=एक मन।

२० मन=एक कान्दी या बरम।

१ मद्रासी मन=२५ पौंड एवर्डोपाइज।

बम्बई प्रान्तीय तोल

४ धान =एक रत्तिका (रत्ती)

८ रत्तिका =एक माशा।

४ माशा =एक टक।

७२ टक =एक सेर।

४० सेर =एक मन।

२० मन =एक कान्दी।

१ बम्बई मन=२८ पौंड एवर्डोपाइज।

औषधि तोलने की अंग्रेजी रीति

औषधि बेचनेवाले थोडी औषधि के लिये ग्रेन काम में लाते हैं और पौंड, औंस, (एवर्डोपाइज) बहुत के लिये। कई डाक्टर नीचे लिखे

(एक गैलन में २७७· २७४ घन इच होते हैं) एक घनफुट पानी तोल में १००० औंस एवर्डोपाइज़ के लगभग होता है।

लम्बाई नापने के अंग्रेजी पैमाने

१२ इच=एक फुट या फीट।

३ फुट =एक गज़।

५½ गज़=एक पोल, रोड या पर्च।

४० पोल या २२० गज़=एक फ़र्लांग।

८ फ़र्लांग या १७६० गज़=एक मील या मायल।

१½ मील=एक कोस।

३ मील =एक लीग।

१ पोल =५ गज़ १ फुट ६ इच।

९ इच =एक वालिश्त।

२ वालिश्त या १८ इच=एक हाथ।

२ हाथ =एक गज़।

६ फीट =एक फेदम।

४ पोल या २२ गज़=एक जरीव (चेन), (यह जमीन नापने के काम आती है)।

१०० कड़ी (लिंक)=एक जरीव (चेन), (यह भी जमीन नापने काम आती है)।

भूमि नापने की रीति

१४४ वर्ग इच=एक वर्ग फुट।

९ वर्ग फुट=एक वर्ग गज़।

३०¼ वर्ग गज़=एक वर्ग पोल-रोड या पर्च।

४ वर्ग पोल=एक रूड।

४ रूड या ४८४० वर्ग गज़=एक एकड।

६४० एकड=एक वर्ग मील।

एक वर्ग जरीव (चेन)=२२×२२ वर्ग गज़ या ४८४ वर्ग गज़।

१० वर्ग जरीव (चेन)=एक एकड़।

१ वर्ग पोल=३० वर्ग गज़ २ वर्ग फीट ३६ वर्ग इच।

क्षेत्र नापने की रीति

३ गज़ =एक गट्ठा।

२० गट्ठे=एक जरीव।

१ जरीव=६० गज़।

बंगाल प्रान्त की भूमि माप

१ वर्ग हाथ=एक गण्डा।

२० गण्डे =एक छटाक।
१६ छटाक =एक काठा।
४ हाथ=एक काठा।
२० काठे =एक बीघा।
१ बीघा =१६०० वर्ग गज।
१२१ बीघे =४० एकड़।
१९३६ बीघे=१ वर्ग मील।

संयुक्त प्रान्त की भूमि माप

२० अनवासी=एक कचवासी।
२० कचवासी=एक बिसवासी।
२० बिसवासी=एक बिसवा।
२० बिसवे =एक बीघा।
१ गज इलाही=३३ इंच।
६० गज इलाही=५५ गज अंग्रेजी।
८ बीघे =५ एकड़।
१ बीघा =(६०×६०) वर्ग गज इलाही=(५५×५५) वर्ग। गज=३०२५ वर्ग गज।

पंजाब प्रान्त की भूमि माप

९ वर्ग करम या ९ मरसाई=एक मरला।
२० मरला=एक कनाल।
४ कनाल=एक बीघा।
२ बीघा =एक घूमा।
१ करम =३ हाथ।
१ बीघा =१६२० वर्ग गज।

मद्रास प्रान्त की भूमि माप

१४४ वर्ग इंच =एक वर्ग फुट।
२४०० वर्ग फुट=एक ग्राउन्ड या मनाई।
२४ ग्राउण्ड =एक काणी।
४८४ काणी =एक वर्ग मील।
१२१ काणी =१६० एकड़।

बम्बई प्रान्त की भूमि माप

३९$\frac{1}{?}$ वर्ग हाथ=एक काठी।
२० काठी =एक पाण्ड।
२० पाण्ड =एक बीघा।
६ बीघे =एक रुके।
२० रुके =एक चहर।

काल परिमाण

[भारतीय]

६० अनुपल=एक विपल।
६० विपल=एक पल।
६० पल =एक घड़ी या दण्ड।
२$\frac{1}{2}$ घड़ी =एक घण्टा।

७½ घडी =एक पहर ।
८ पहर या ६० घडी=एक दिन ।
७ दिन =एक सप्ताह या हफ्ता ।
१५ दिन =एक पक्ष ।
३० दिन =एक महीना ।
१२ महीना=एक वर्ष या साल ।
१२ वर्ष =एक युग ।
१०० वर्ष =एक सदी या शताब्दी ।

शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से दूसरे शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तक अर्थात् २९ दिन ३१ घडी ५० पल और ७ विपल का एक चन्द्र मास होता है । सयुक्तप्रात में चन्द्रमास ही माना जाता है ।

काल परिमाण
[अग्रेजी]

६० सेंकिड=एक मिनट ।
६० मिनट=एक घण्टा ।
२४ घण्टे =एक दिन ।
७ दिन =एक सप्ताह ।
३६५ दिन=एक वर्ष ।
३६६ दिन=एक लीप ईयर या लोद का वर्ष ।
१०० वर्ष=एक सदी या शताब्दी ।

अग्रेज़ी दिन आधी रात से आरंभ हुआ माना जाता है ।

सामान्य रूप से एक महीना ३० दिन का गिना जाता है, परन्तु अग्रेज़ी हिसाब के अनुसार १२ मास जिनमें वर्ष विभाग किया गया है, बराबर दिनो के नहीं होते ।

फरवरी २८ दिन की होती है और जब लीप ईयर आता है तो २९ दिनकी होजाती है । सितम्बर, अप्रैल, जून और नवम्बर ३० दिन के होते हैं, शेष महीने ३१ दिन के ।

यदि किसी वर्ष की सख्या ४ से पूरी बट जाय, तो उस वर्ष को अग्रेज़ी में लीप ईयर कहते हैं, परन्तु सदियो में से जो ४०० से पूरी न बट सके, लीप ईयर नहीं कही जायगी । जैसे १८८८, १७३२, १६०० लीप ईयर है, परन्तु १७३९, १८००, १८८७, लीप ईयर नहीं है ।

एक सौर वर्ष में ३६५ २४२२१८ दिन (३६५ दिन ५ घण्टे ४८

मिनट ४८ सेकण्ड के लगभग) अथवा ३६५¼ दिन होते हैं। इस कारण व्यवहारिक वर्ष को सौर वर्ष के अनुकूल बनाने के लिये तीन लगातार साल ३६५ दिन के लेते हैं और चौथे साल को जिसे अंग्रेजी में लीप ईयर कहते हैं, ३६६ दिन का और इस लीप ईयर की संख्या ४ से पूरी बट सकती है। परन्तु इस रीति से ४०० वर्ष में १०० दिन बढ़ जाते हैं जो कुछ दिन हिसाब में अधिक हो जाते हैं, क्योंकि ·२४२१८×४००=९६ ८८७२ या लगभग ९७ दिन। इस आवश्यक शुद्धता के लिये वह सदी जो ४०० में पूरी नहीं बट सकती सामान्य वर्ष गिना जाता है, उसमें फरवरी महीना २८ दिन का गिना जाता है।

वर्ष में ५२ सप्ताह और एक दिन होता है।(५२×७+१=३६५) परन्तु आमदनी का हिसाब लगाते समय वर्ष ५२ सप्ताह का ही मानते हैं।

महीनों के नाम

(अंग्रेजी)

जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल, मई, जून, जौलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्तूबर, नवम्बर, दिसम्बर।

हिन्दू-संस्कृत

बैसाख—वैशाख।

जेठ—ज्येष्ठ।

असाढ—आषाढ।

सावन—श्रावण।

भादो—भाद्रपद।

क्वार—आश्विन।

कातिक—कार्तिक।

अगहन—मार्गशीर्ष।

पूस—पौष।

माह—माघ।

फागुन—फाल्गुन।

चैत—चैत्र।

मुसलमानी

मुहर्रम, सफर, रबी-उल् अव्वल, रबी-उल्-सानी, जमादी-उल्-अव्वल, जमादी-उल्-सानी, रज्जब, शाबान, रमज़ान, शव्वाल, ज़ीकाद, ज़िलहिज।

दिनों के नाम

हिन्दी—

रविवार, सोमवार, मगलवार, वुद्धवार, वृहस्पतिवार, शुक्रवार, शनिवार।

अंग्रेज़ी—

सण्डे, मण्डे, ट्यूसडे, वेडनेसडे, थर्सडे, फिराईडे, सटरडे

संख्याओं के गिनने की रीति

१२ इकाई=एक दर्जन।

१२ दर्जन =एक ग्रौस।

१२ ग्रौस =एक बडा ग्रौस।

२० इकाई=एक कोडी।

काग़ज़—

२४ तस्ता=एक दिस्ता।

२० दिस्ता=एक रिम।

१० रिम =एक गट्ठा।

छापने के क़ागज़ों की माप

डेमी =२२½"×१७½"

मीडियम =१९"×२४"

रोयल =२०"×२५"

सुपर रायल =२०½"×२७½"

डब्ल क्राउन =२०"×३०"

इम्पीरियल =२२"×३०"

लार्ज पोस्ट =१६½"×२१"

डब्बल फुलसकेप=१७"×२७"

मुड़े हुये कागजों की माप

क्राउन 8 Vo =७½"×५"

डेमी 12 Mo =७⅜"×४⅜"

डेमी 8 Vo. =९"×५½"

मीडियम 8 Vo =९⅝"×५¾"

क्राउन फोलियो =१५"×१०"

फुल्सकेप 8 Vo =६⅝"×४⅛"

इम्पीरियल 8 Vo =११"×७½"

डेमी 4 To =११"×९"

रोयल 4 To =१२½"×१०"

डेमी फोल्यो =१८"×११"

ड्रायंग के कागजों की माप

डेमी =२०"×१५"

मीडियम =२२"×१७"

रोयल =२४"×१९"

सुपर रोयल =२७"×१९"

डब्बल ऐलीफेण्ट=४०"×२६"

एम्पेरर =७२"×४८"

इम्पीरियल =३०"×२२"

ऐलीफेण्ट =२८"×२३"
कोलम्बीयर =३४"×२३"
एटलस =३३"×२६"
एन्टीक्वारीन =५२"×३१"
म्योरम =३४"×२८"

पत्थर की माप

१६ तसु =एक विस्वा ।
२० विस्वा=एक गज ।
१ गज =४०० घन विश्वे ।

कपड़ों की माप

२¼ इंच =एक गिरह ।
३ अंगुल =एक गिरह ।
४ गिरह =एक बालिश्त ।
२ बालिश्त=एक हाथ ।
८ बालिश्त या १६ गिरह =एक गज ।
२ हाथ =एक गज ।
५ बालिश्त=एक एल ।

पिण्ड नापने की रीति (अंग्रेजी)

१७२८ घन इंच=एक घन फुट ।
२७ घन फीट =एक घन गज ।
१ जहाजी टन =४२ घन फीट ।

विभिन्न माप

७२ बिन्दु =एक इंच ।
१२ रेखा =एक इंच ।
३ खड़े जौ =एक इंच ।
३ इंच =एक पाम ।
४ इंच =एक हाथ (घोड़े नापने के लिये) ।
५ फीट =एक डग ।
१२० फेदम =एक केविल की लम्बाई ।
६०८० फीट =एक नॉट (भौगोलिक मील)
६० नॉट या भौगोलिक मील=एक डिग्री लेटिट्यूड)

संसार भर का समय

ग्रीन विच के समय से प्राय. घडिया मिलाई जाती है। जब वहा ठीक दोपहर के १२ वजेंगे तो—

वम्वई	में सायकाल	के	४	वजकर	५२	मिनिट	होगे।
कलकत्ते	में सायकाल	के	५	वजकर	५४	मिनिट	होगे।
केरो	में दोपहर	के	२	बजकर	५	मिनिट	होंगे।
केप टाउन	में दोपहर	के	१	वजकर	१४	मिनिट	होगे।
वरमिंघाम	में दोपहर	के	११	वजकर	५२	मिनिट	होगे।
ऐडेलाईड	में रात्रि	के	९	वजकर	१५	मिनिट	होगे।
डब्लिन	में दोपहर	के	११	वजकर	३५	मिनिट	होंगे।
जमैका	में प्रात काल	के	६	बजकर	५२	मिनिट	होंगे।
मासको	में तीसरे पहर	के	२	वजकर	३०	मिनिट	होगे।
न्युयोर्क	में प्रातःकाल	के	७	वजकर	४	मिनिट	होगे।
पेरिस	में दोपहर	के	१२	वजकर	९	मिनिट	होगे।
पेकिंग	में सायकाल	के	७	वजकर	४६	मिनिट	होंगे।
रोम	में दोपहर	के	१२	वजकर	५०	मिनिट	होगे।
वाशिंगटन	में प्रात काल	के	६	वजकर	५२	मिनिट	होगे।

॥ समाप्त ॥

अनुभवानन्द जी महाराज

— सेवा-सदन —

प्रामाणिक औषधियों का परिचय

मदन

अपूर्व, अनुपम, अचूक और असाधारण गुणकारी, नवजीवन प्रदायिनी रसायन।

—— ० ——

योग—मकरध्वज, रस सिन्दूर षडगुणी, फौलाद, शिलाजीत मलाई, विलावरोचन, मूसली, गूगल, वैक्रान्तभस्म, वसलोचन और मिश्री आदि।

बहुत से लोग ऐसे देखे जाते हैं कि जिन्हें बिना किसी खास बीमारी के भी कमजोरी, दुबलापन, वीर्य की निर्बलता, प्रमेह, हड्डियो की निर्बलता और चेहरे पर बेरौनकी बनी रहती है। बुखार न होने पर भी दोपहर को, खाना खाने के बाद, शरीर भारी और सुस्त हो जाता है। बिना किसी खास वजह के दिल में निराशा सी रहती है, खाते-पीते रहने पर भी खून कम बनता है। अच्छे से अच्छा खाना पीना भी मानो पचता नहीं—शरीर का कोई उपकार नहीं करता और इस तरह कीमती आहार भी बेकार ही चला जाता है।

कई युवक लड़कपन में की गई भूलो के शिकार होकर जवानी में पछताते है, अपनें वर्तमान जीवन से तग आकर मौत को अच्छा समझने लगते है और इस तरह मानो जवानी में ही अपने को बूढा हुआ समझने के लिये मजबूर हो जाते है। ऐसे निराश रहनें वाले लोग विज्ञापन बाजों के हथकण्डो के शिकार होकर विश्वास खो बैठते है—और भी निराश हो जाते है। ऐसे दर्जनो युवक देखने में आये है कि जो अपने हाथों अपना सब कुछ गवाकर अपनी मामूली सेहत से भी हताश होगये है। इन लोगो के सिर में हलका हलका दर्द रहता है, आखें बुझी हुई सी, शरीर के सभी पठ्ठे ढीले पडे हुये और जीवन की उमग बिलकुल मरी हुई सी दिखाई देती है।

हलके होकर काम करने लायक बने रहते है, दूसरी तरफ पाचन सीकरो (Secressions) की कमी से विना पचे बच रहने वाले खाद्य पदार्थ भी खूब पचने लगते हैं। इससे भूख बढ़ जाती है, खाया पिया हज़म होकर रुधिर बनने में सहायता देने लगता है। खट्टे-फीके डकार—बन्द हो जाते हैं। मुंह से पानी आना, कब्ज़, पेट का भारी रहना और आफरा आदि सब विकार मिटकर पाचन क्रिया अपनी स्वाभाविक अवस्था में आ जाती है। पाचन क्रिया की खराबी और कब्ज से होने वाला सिर दर्द, जुकाम और बवासीर जैसी बीमारियो पर भी बहुत अच्छा असर पडता है।

आप विश्वास करें कि सहा खार में मामूली नमक, खटाई, जमचूर और सोठ या सुहागा नही, बल्कि असली खारे काम में लाई गई है, जिन्हे हम स्वयम तय्यार करते हैं।

मूल्य एक शीशी ।) चार आना।

मानसी

(महिलाओं के लिये)

हिस्टेरिया—जैसे भयकर रोग से पीड़ित महिलाओं के लिये मानसी अनुपम औषधि है।

मनोजा और नारी सोम के साथ इसका सेवन चमत्कारी प्रभाव दिखाता है।

हताश और निराश महिलाओ को इसका सेवन कर अपने स्वास्थ्य को उन्नत करना चाहिये।

मूल्य एक डब्बा २) रुपया।

मंगाने का पता—

संचालक, सेवा-सदन चांदनी चौक, दिल्ली।

शशि शीकर
(चन्द्र फुहार)

योग —कर्पूर, सत अजवायन, हींग, लौंग, कस्तूरी, सोया, इलायची, सौंफ, ऐमोनिया आईयोडायड आदि ।

हैजा-विशूचिका, वमन-कै-उल्टी, अपाचन-बदहज्मी-अजीर्ण, अफारा, अतिसार, पेचिश, खट्टी डकारें आना, अरुचि आदि बीसो रोगो में विभन्न अनुपानो के साथ खाने से और शिर दर्द, दान्त दर्द, डाढ दर्द, रक्त स्राव, कर्ण शूल, फोडा-फुन्सी, ज़ख्म-घाव-चोट, सूजन-वरम, खुजली, दाद आदि पच्चासो रोगो में लगाने से अति शीघ्र ही आराम मालूम होता है—चमत्कार प्रतीत होता है ।

अकस्मात ही उत्पन्न हो जाने वाली और घरेलू अधिकाश छोटी बडी बीमारियो मे शशि शीकर एक अच्छे अनुभवी डाक्टर या वैद्य का काम करती है, बहुतसा खर्च बचाती है और अपने चमत्कारो से रोगी-कष्ट पीडितो तथा उनके परिवार वालो को आश्चर्य चकित कर देती है । शशि शीकर की एक शीशी समय पर बडी बडी बोतलो और दवाओ के बक्सो से अधिक लाभ पहुँचाती है, परेशानियो से बचाती है और रक्षा करती है । निश्चय ही यह सुधा-अमृत है । प्रत्येक घर और जेब में इसका रहना अनिवार्य है ।

मूल्य एक शीशी का १) एक रुपया ।

का पता—

सञ्चालक, **सेवा-सदन,**
चाँदनी चौक, दिल्ली ।

पायरास
अलभ्य दन्त-मञ्जन
योग—हरताल, सगज़राहत, पीली कौड़ी, दार चीनी, कारवालिक ऐसिड, माजू और हीरा दोखी आदि।
आम लोगो की यह धारणा सी हो गई है कि पायरिया विना दान्त निकलवाये जा ही नहीं सकता। यह वात ठीक ऐसी ही है कि मानो आँखें निकलवाये विना उनका दु खना नहीं जा सकता। दान्तो को कायम रखकर ही पायरिया का इलाज होना चाहिये और होता है। कुदरत के दिये हुये दान्तो को निकलवा देना अपने मुह को और भी वेढगे तौर पर ख़राव कर लेना है। दान्तो को कायम रखते हुये ही यदि आप पायरिया नष्ट करना चाहें तो विना सकोच के पायरास का सेवन करे। पायरास न केवल पायरिया को मिटा देता है, वल्कि यह दान्तो को हिलने से वचाकर मज-वूत कर देता है और मोतियो की तरह चमका देता है।
मूल्य एक शीशी ॥) आठ आना।
मगाने का पता—
सञ्चालक, सेवा-सदन,
चाँदनी चौक, दिल्ली।

नयन सुधा

(अनुभूत आईलेशन)

योग—कपूर ग्लेसरीन आदि।

आज कल जितने भी देसी या अंग्रेजी आखों के लोशन बने, उनमें नयन सुधा ही विश्वास और भरोसे की चीज सिद्ध हुई है। आखो में रोहे हों या कुकरे, धुन्ध पडती हो या गुबार, लाली हो या दुखनी—नयन सुधा हर हालत में सुधा और अमृत का काम करती है। इसने १४-१४ साल के बिगडे हुये कुकरो पर जादू का सा असर किया है। इससे नजर ठीक हो जाती है, लाली चली जाती है और आंखें निर्मल होजाती हैं। मूल्य एक शीशी।) चार आना।

नयन तारा

(अत्यन्त ही गुणदायक सुरमा)

योग—पारा, सीसा, जस्ता, मोती, फिटकरी, जगार, भीमसेनी-
काफूर, ममीरा हल्दी और चमेली के फूलो का सत आदि।

नयन तारा वास्तव में उन लोगो के लिये बनाया गया है जिनकी नजर कमजोर रहती है, चश्मे का नम्बर बराबर बढना ही जाता है और आखो की पलके दिन पर दिन भारी होती जा रही हैं। नयन तारा इन सब विकारों के अलावा जाला, फूला, धुन्ध, गुबार, पानी जाना, मैल भरा रहना, आखों का चिपके रहना और रतना (रेटीना) के फैलते जाने आदि सभी तकलीफों के लिये अचूक और चमत्कारी असर करता है।

नयन तारा न तो तेज लगता है, न यह आखो को बेढगे तौर पर काला करता है और न इसकी आदत ही पडती है—लगाने पर जरासी ठडक पड़ती है और पटल निर्मल हो जाते हैं।

मूल्य एक शीशी का ॥) आठ आना।

मंगाने का पता—सचालक, सेवा-सदन, चांदनी चौक, दिल्ली।

तापसी

पुराने और नये, तेज़ और मन्दे तथा रोज़ाना और कभी कभी आने वाले सब बुखारों के लिये अद्वितीय उपयोगी दवा।

तापसी—मलेरिया, सरदी से आने वाले, तिजारी, चौथिया, सात रोजा, मन्थर, मोहरका, निरंतर आने वाले, नमोनिया और दूसरे सभी नये तथा पुराने बुखारों को दूर करती है।

सो—आज २५ साल से बरती जा रही है और इस की हजारों शीशियाँ सभी प्रान्तों में फैल गई हैं; पर इसके विफल होने की सूचना दस फी सदी भी नहीं पाई गई।

तापसी—सब रोगियों के लिये, सब हालतों और सब मौसमों में एक जैसा लाभ पहुँचाती है और बच्चे से बूढे तक को सेवन कराई जाती है।

मूल्य एक पेकिट -) एक आना

सञ्चालक, सेवा-सदन, चाँदनी चौक, दिल्ली।

महायोग विज्ञान

अन्तर जगत् के अलौकिक ऐश्वर्य तथा दिव्य ब्रह्म ज्ञान को दर्शाने वाला हिन्दी भाषा का अपूर्व ग्रन्थ ।

प्राचीनकाल में अध्यात्म ज्ञान के प्रकाशक हमारे पूर्वज, ऋषि, मुनि, योगी जन जिस शक्ति के प्रभाव से अलौकिक सामर्थ्यसम्पन्न होकर दिव्य आत्मज्ञान का अनुभव करके परमसुख और शान्ति का सौभाग्य प्राप्त करते थे, उस परम गुप्त कुण्डलिनी महाशक्ति का रहस्य, तथा वास्तविक भजन, पूजन जप, तप, योग, ज्ञान, ध्यान की शीघ्र सिद्धि का पथ प्रदर्शक और संसार में ही रहकर सुखपूर्वक सहज में ही, सरलता से, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त कराने वाला यह अपूर्व ग्रंथ "महायोग विज्ञान" पढ़कर अपने अभीष्ट की सिद्धि कीजिये ।

आर्य्य समाज में क्रान्ति पैदा करने वाली

युग परिवर्तनकारी रचना

आर्य समाज किस ओर ?

लेखक—श्री वसिष्ठ जी ।

प्रस्तावना लेखक—

श्री सत्यदेव विद्यालङ्कार ।

यदि आप आर्य्य समाजी हैं ।

यदि आप ऋषि दयानन्द के भक्त हैं ।

यदि आप आत्म चिन्तन और निज सुधार चाहते हैं ।

यदि आप आत्म विश्लेषण के अभिलाषी हैं ।

और

यदि आप स्वधर्म, स्वदेश तथा स्वजाति के सच्चे शुभचिन्तक हैं ।

तो

इस पुस्तक को ठण्डे दिल से अवश्य ही पढ़िये,

अपने मित्रों को पढ़ाइये

और

आर्य्य समाज के भूत, भविष्य तथा वर्तमान पर विचार कीजिये ।

मूल्य केवल १) एक रुपया ।

प्रकाशक, सरस्वती-सदन, चांदनी चौक, दिल्ली ।

स्त्री-शिक्षा के प्रवर्तक, मात ... न के लेखक

कन्या महाविद्यालय, जालन्धर के

मस्थापक

स्वर्गीय श्री लाला देवराज जी

का

जीवन परिचय

लेखक—श्री मत्यदेव विद्यालङ्कार।

भूमिका लेखक—

'मेकसरिया-पारितोपक' के प्रवर्तक

श्री सीताराम जी सेकसरिया

कर्मशील—जीवन का आदर्श अपने और अपनी सन्तान के सामने सदा बनाये रखने के लिये इसकी एक प्रति आप को अपने घर में जरूर रखनी चाहिये।

मूल्य केवल ।–) पाँच आना

प्रकाशक, मरस्वती-सदन,
चादनी चौक, दिल्ली।

'वैद्यक मान' आदि कई पुस्तकों के लेखक

सुप्रसिद्ध गम्भीर विचारक

वहु भापा विज्ञ, वैद्यक विज्ञान के मर्मज्ञ

और

सिद्ध हस्त चिकित्सक

कविराज श्री शान्त स्वामी

अनुभवानंद जी महाराज

रचित नीचे लिखी मार्मिक पुस्तकें शीघ्र ही प्रकाशित होंगी—

१—क्षय विज्ञान।

(वृहद्, विस्तृत और अनुपम ग्रन्थ रत्न)

२—पाचन प्रक्रिया।

३—प्राण प्रक्रिया

४—एकक चिकित्सा।

५—सूत्र या स्नायु चिकित्सा।

६—भक्त की भावना।

(द्वितीय सशोधित और परिवर्धित सस्करण)

७—प्रभू का प्रसाद। आदि आदि।

निवेदक—द्वारिका प्रसाद सेवक,

संचालक, सेवा-सदन,

चांदनी चौक, दिल्ली।